(एक सम्पूर्ण एकल नाटक)

मैं कृष्णा कृष्ण की

विभा रानी

मैं कृष्णा कृष्ण की!

(एक सम्पूर्ण एकल नाटक)

विभा रानी

© विभा रानी

प्रथम संस्करण: सितंबर, 2018

सहयोग राशि: Rs. 90

रेखांकन व डिजाइन : विधा सौम्या

(इस पुस्तक से मिली समस्त लेखकीय सहयोग राशि का उपयोग कैंसर मरीजों के सहायतार्थ खर्च किया जाएगा।)

लेखक की पूर्व अनुमति के बिना इस किताब का कोई भी हिस्सा इलेक्ट्रोनिक, मेकैनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य किसी माध्यम से पुनर्प्रस्तुत, प्रसारित अथवा संग्रहित नहीं किया जाएगा।

AVITOKO Books

302/A, Dheeraj Residency

Opp. Oshiwara Bus Depot,

Goregaon (West), Mumbai-400104

avitokobooks@gmail.com/ +91-9820619161

Main Krishna Krishn Ki

A full length solo play by Vibha Rani

© Vibha Rani

First Edition: September, 2018

Illustration and Design: Vidha Saumya

Printer:

Contributory Amount: Rs. 90

(The proceeds, received by the author, from the sale of this book will be used towards medical expenses of those undergoing treatment for Cancer.)

No part of this publication may be reproduced, transmitted or stored in a retrieval system, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of the author.)

Youtube Link : https://www.youtube.com/watch?v=nkmnZjpJhik

Team AVITOKO Books

समर्पण!

रंगमंच की दुनिया के उन एकल कलाकरों के नाम,

जिन्होने एकल नाटक को सामने लाने

और उसे सम्मानजनक स्थान दिलाने में

अपनी महती भूमिका निभाई।

एकल नाटक सीरीज!

2007 का समय था, जब पूरे बीस साल बाद एक्टिव थिएटर में प्रवेश कर रही थी। ढेर सारी आशंकाएँ मन में थी। एक इतने लंबे अंतराल तथा हिन्दी और मैथिली की स्थापित लेखक होने के बाद एक निहायत अलग विधा, जिसके लिए हमारा साहित्य समाज बिलकुल ही तैयार नहीं, में घुसना!

तो मन ने जवाब दिया- "लेखन और पाठन एकांत की अभिव्यक्ति है। भाषाई संकट की इस वेला में हिन्दी और मैथिली तो वही पढ़ेंगे, जिन्हें अक्षर का ज्ञान है। मगर समझनेवालों की संख्या तो पढ़नेवालों से निश्चित ही कई-कई गुना अधिक होती है। तो, क्यों न एक रचना को एक ही समय में एक के बदले एक बड़े समूह में पहुंचाया जाए।

और जुट गई थिएटर में। तब सब समझते थे, मैं केवल लेखक हूँ। अब सब समझते हैं, मैं केवल रंगकर्मी हूँ। जबकि, मैं केवल और केवल रचनाकार - कविता, कहानी, नाटक, रंगमंच, लोकगीत, लोक कथाओं की रचनाकार!

नाटक में अपने लिए ही एक चुनौती खड़ी की- लीक से हटकर कुछ करने की। पाया, एकल की दुनिया तो अभी भी एकल सी ही है- परित्यक्ता सी, वनवासिनी सी। किसी का इसपर अपेक्षाकृत ध्यान नहीं। ऐसा नहीं था कि एकल मुझसे पहले किसी ने किया नहीं या मेरे समय में कोई कर नहीं रहा था। सब हो रहा था, लेकिन सामूहिक तौर पर नहीं। मुझे लगा कि बीस साल बाद एक कलाकार के रूप में अपने को माँजने और नाटक की चुनौतियों को स्वीकारने के लिए एकल नाटक से बढ़कर और कुछ नहीं।

खामोश तरीके से काम करने में विश्वास रखनेवाली मैं एक दृढ़ संकल्प मन में लिए चली कि एकल को ग्रुप थिएटर के समकक्ष लेकर आना है। काम इतना आसान नहीं था। 2007 में ही फिनलैंड से न्योता आया। वहाँ के दर्शकों को ध्यान में रखते हुए एक अँग्रेजी सोलो तैयार किया- "Life is not a Dream!" हेलसिंकी में इसके शो होने के बाद मुंबई में इसके तीन-चार शोज हुए। फिर रायपुर से बुलावा आया, इसके हिन्दी रूप के लिए। हेलसिंकी और रायपुर में तकरीबन 500 और 1000 दर्शकों के बीच

एक से सवा घंटे का एकल नाटक प्रस्तुत करना! लगा कि यह मुश्किल तो है बेहद, मगर है उतना ही आनंददायी। उसके बाद एकल मेरे जीवन का ध्येय बन गया। लगभग हर साल एक नाटक- "बालचन्दा", "मैं कृष्णा कृष्ण की", "भिखारिन", "बिम्ब-प्रतिबिंब", "एक नई मेनका", "नौरंगी नटनी", "समाधि भाई रामसिंह" जैसे एक के बाद एक सोलो नाटक। लोग नोटिस लेने लगे, दर्शक भी और ग्रुप्स भी। मेरा एकल नाटक का मौन आंदोलन अपना आकार रचने लगा।

आज खुशी है कि अलग-अलग ग्रुप्स के अलावे सरकारी, गैर सरकारी संस्थाएं भी अब एकल नाट्य समारोह करने लगी हैं। खुद मैंने 2017 में पाँच दिवसीय महिला एकल थिएटर समारोह आयोजित किया। एकल के इस यज्ञ में मैं एक नन्ही समिधा बनी रह सकी हूँ, यह मेरा सबसे बड़ा प्राप्तव्य है।

अबतक मेरे पाँच नाटक किताबघर, दिल्ली से आ चुके हैं। इनमें से दो नाटक "आओ तनिक प्रेम करें" और "दूसरा आदमी दूसरी औरत" तो देश भर के अलावा विदेश में भी और हिन्दी के अलावा गुजराती, मराठी में भी धूम मचा रहे हैं।

एकल नाटकों के प्रकाशन को लेकर मेरी कुछ अलग योजना थी। एकल नाटक भावों का नाटक है। इसमें शब्द कम होते हैं। इसलिए लिखित रूप से स्क्रिप्ट छोटी होती है। पुस्तक से बदलकर यह पुस्तिका हो जाएगी। पुस्तक के लिए इसे एकल नाट्य संग्रह के रूप में इसे निकालना पड़ता, जो मैं नहीं चाहती थी। एक सपना था कि चूंकि, एकल में भाव प्रमुख होते हैं, इसलिए, इन्हें इसकी तसवीरों के साथ निकाला जाए, ताकि पढ़ते समय आप नाटक के भावों को शब्दों के साथ साथ चित्रों के माध्यम से भी महसूस कर सकें।

मेरी इस सोच पर Notnul ने अपनी रज़ामंदी दी। ऑनलाइन है तो तस्वीरों को देखने और उसके साथ एकल के भावों को आत्मसात करने में आपको और भी सुविधा होगी। यह नाटक यूट्यूब पर भी है। उसका भी लिंक मैं शेयर कर रही हूँ। अब आप नाटक पढ़ते हुए तस्वीरों के साथ भावों की दुनिया में प्रवेश करें और उसके बाद यूट्यूब पर इस नाटक को देखें। इस नाटक या एकल के संबंध में आपके

विचारों का स्वागत रहेगा। "एकल नाटक प्रशिक्षण" भी एकल-आंदोलन को आगे बढ़ाने का एक हिस्सा है। आप इसके भी भागीदार बन सकते हैं।

एकल नाटक की यह सीरीज है, जिसकी शुरुआत "मैं कृष्णा कृष्ण की" से की जा रही है। नाटक के बारे में हम यहाँ कुछ नहीं लिखेंगे, बल्कि इसके बारे में आपसे ही सुन और जानकर हमें अच्छा लगेगा। हमें तो अपने एक अलग किस्म के प्रयास में आपको अपना साझीदार पाकर खुशी हो रही है।

नाटक, एकल नाटक, साहित्य और नाटक के अंत:सम्बन्धों पर हम अपने सीरीज में आगे भी बात करते रहेंगे। फिलहाल इतना ही। आप सबको ढेर सारा प्यार, दुलार और शुभकामनाएँ!

(कृष्णा (द्रौपदी) पांडवों के साथ अंतिम यात्रा पर है। वह बार-बार चलती है, गिरती है, व्याकुल हो कर युद्धिष्ठिर सहित पांचों पांडवों को बुलाती है। परंतु, कोई उसके लिए नहीं रूकता। सभी को पुकारते हुए और उनके साथ-साथ चलाने के प्रयास में वह असफल हो जाती है और एक जगह लड़खड़ाकर गिर जाती है। वहीं से उसका प्रलाप आरंभ होता है।)